अध्याय : 3

‘मनोवैज्ञानिकता : स्वरूप विवेचन’

अध्याय : 3

'मनोवैज्ञानिकता : स्वरूप विवेचन'

प्रस्तावना :

साहित्य मानव के भावों विचारों की अभिव्यक्ति है। सहित्य में मानव जीवन के संघर्षो-समस्याओं से उत्पन्न मनोविकार, अनुराग, विद्वेष की सहज और कलात्मक अभिव्यक्ति होती है। साहित्य के केंद्र बिंदु मानव है और मानव मन की अंतर्बाह्य प्रवृत्तियाँ ही साहित्य में लक्षित होती हैं। डॉ. शाम सुंदर दास कहते हैं -"मनुष्य के भाव और विचार तथा उसकी कल्पनाएँ भी बड़ी विचित्र और अनोखी हुआ करती हैं। साहित्य मनुष्य की इन्हीं विचित्र भावों, विचारों तथा कल्पनाओं का व्यक्त रूप है।"[1] मनोविज्ञान मानव स्वभाव, मानव व्यवहार का विश्लेषण करता है। साहित्य और मनोवैज्ञानिकता की आधारभूत सामग्री एक ही है। दोनों भी व्यक्ति को समझने की चेष्टा में रत है। मनोवैज्ञानिकता का संबंध वास्तविक जीवन से है और साहित्य अनुभूत जीवन की सहज कलात्मक अभिव्यक्ति होता है।

साहित्य और मनोवैज्ञानिकता का अभिन्न संबंध है। मानव जीवन में मनोवैज्ञानिकता का असाधारण महत्त्व है, क्योंकि सहित्य मनोविज्ञान के सिद्धांतों से प्रभावित होता है। वैवाहिक जीवन, प्रेम, सेक्स और बच्चों का लालन-पालन संबंधी पुस्तकें पाठकों के लिए मनोवैज्ञानिक साहित्य के लिए मनोभूमि तैयार करने में सहायक हैं। आज का साहित्यकार बाह्य जीवन की चौका- चौंध को त्याग कर मानव मन की गहराई नापने में संलग्न है। मानव के अचेतन को रूपायित करना आज साहित्यकार को अभिप्रेत है। इस प्रकार साहित्य की आधार भूमि मनोविज्ञान है। साहित्य और मनोविज्ञान दोनों ही व्यक्ति को समझने, जानने को चेष्टा करते हैं। समसामाजिक युग में मानव की बढती आवश्यकताओं, महत्वाकांक्षाओं ने उसे निराश और हताश कुंठाग्रस्त बना दिया है। असामान्यता से कैसे छूटकारा हासिल करें यह मनोविज्ञान बताता है। इस प्रकार मनोविज्ञान का संबंध वास्तविक

जीवन से है और साहित्य उस वास्तविक जीवन को कलात्मक रूप प्रदान करता है। अतः स्पष्ट है कि आधुनिक साहित्य की आधार भूमि मनोविज्ञान है।

अतः उपन्यास और मनोविज्ञान का घनिष्ठ संबंध है। मनोविज्ञान सामान्य और असामान्य व्यक्ति में अंतर करता है। डॉ. सरयु चौबेजी के अनुसार ''असामान्य व्यक्ति की क्रियाशीलताएँ सामाजिक मर्यादाओं के अनुरूप नहीं होती।''[2] इस प्रकार जिस व्यक्ति की क्रियाएँ सामाजिक मर्यादाओं के अनुकूल नहीं होती वे व्यक्ति असामान्य होते हैं। असामान्यता से पीडित व्यक्ति चिडचिडे, उग्र, संवेदनशील और स्वार्थी होते हैं। सामाजिक कार्यों में हाथ नहीं बँटाते और उनका जीवन कुव्यवस्था का शिकार होता है। अतः असामान्य व्यक्ति की पहचान मनोविज्ञान द्वारा की जाती है। व्यक्ति की असामान्यता का कारण खोजकर उसे सामान्यता प्रदान करने का कार्य मनोविज्ञान करता है। वह व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार और मन का अध्ययन करता है। इसप्रकार मनोवैज्ञानिक आधार पर ही हम उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करते हैं। उपन्यास के पात्रों की क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं को, उनके मन को विश्लेषित कर सकते हैं। अतः हिंदी उपन्यासों में चित्रित मानव व्यवहार का अध्ययन मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में किया जा सकता है।

3.1 **मनोविज्ञान और साहित्य :**

साहित्य चाहे सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक किसी भी कोटि का क्यों न हो उसमें मनोविज्ञान के तत्व थोड़ी बहुत मात्रा में विद्यमान अवश्य रहते हैं। युंग मनोविज्ञान का काव्य-कला-साहित्य से अत्यंत गहन एवम् घनिष्ठ संबंध मानते हैं। सभी कलाकृतियों एवम् साहित्यिक रचनाओं में रचनाकार अपनी बहिर्मुखी एवम् अंतर्मुखी दोनों अभिवृत्तियों की एवम् चिंतन, भावना, संवेदन तथा अंत: प्रशंसा की चारों क्रियाओं का भरपूर उपयोग करता है, जिसके परिणामस्वरूप कृति में विस्तार और गहराई, विचार और भावना, सामान्यता एवम् विलक्षणता का आभास अवश्य अनुभव किया जाता है, किंतु इन रचना एवम् कृतियों के सभी कारणों का पता लगाना संभव नहीं है। इसलिए कलाकृतियों एवम् विशिष्ट साहित्यिक रचनाओं के मूल्यांकन का दायित्व किसी मनोविज्ञान वेत्ता के

बजाय किसी सौंदर्यशील विशेषज्ञ या साहित्य आलोचक के लिए छोड़ा जाना ही युंग ने योग्य माना है।

फ्रायड के अनुसार, मानव के अचेतन में दबी वासनाएँ जब अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल होती हैं तब अपने असली रूप में प्रकट न होकर कुछ उदात्तीकृत रूप में स्वरूप बदलकर तथा प्रतीकों में परिणत होकर या उनका आवरण धारण करके ही अभिव्यक्त होती है। फ्रायड का मत है कि कथाकार अपने जीवन के प्रेरक तत्त्वों को हासिल करने हेतु प्रेक्षपण, विपर्यय अर्थात् विरोधी तत्त्व के माध्यम आत्माभिव्यक्ति, विभक्तीकरण एवम् प्रतीकीकरण आदि उपायों का सहारा लेता है। स्पष्ट है कि साहित्य में व्यक्ति से संबंधित सारे मानसिक क्रिया-कलाप आते हैं, जो मनोविज्ञान के लिए अध्ययन के विषय थे और हैं।

3.2 **उपन्यास और मनोवैज्ञानिकता :**

उपन्यास का व्यक्तित्व इतना व्यापक और महान है कि उसकी सीमा में समस्त मानव-व्यापार, उसकी समस्त समस्याएँ, निदान और भाव स्वीकृति रहती है। मानव समाज की उत्पत्ति के साथ ही उपन्यास का आरंभ हुआ। मनुष्य के मस्तिष्क की गुप्त से गुप्त बातें, उसकी उमंग उसकी अभिलाषा तथा रहस्य, ये सभी उपन्यासों के विषय हैं। उपन्यास अपनी युवा मन जैसी गंभीरता, जीवन की जटिलता के कारण युवा मनोविज्ञान, वैयक्तिक मनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान और असामान्य मनोविज्ञान के अधिक निकट हैं। अज्ञेय जी ने तो मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित उपन्यास को ही श्रेष्ठ माना है। हमारी शंकाओं और चिंताओं की खोज ही उपन्यास है। अज्ञेय का कहना था कि दुनिया को देखने के बजाय अपने दिल को देखना चाहिए। उपन्यास मनुष्य की बौद्धिक या सामाजिक अपेक्षाओं से ज्यादा जुड़ा हुआ है। निरंतर जटिल होते जीवन को वहन कर सकना शायद उपन्यास के ही वश का है। मानसिक अंतर्द्वंद्व, कुँठाएँ और स्वप्न - मनोविज्ञान को अपने उपन्यासों में अज्ञेयजी ने लिया।

प्रत्येक रचनाकार अपने आंतरिक तथा बाह्य परिवेश को अपनी रचनाओं में स्थान देता है। रचना चाहे यथार्थपरक हो या काल्पनिक, उसमें वर्णित पात्र भावुक, संवेदनशील, आक्रमक, स्थितिप्रज्ञ आदि 'प्रकार' के होते है। कतिपय उपन्यासों में पात्रों के मानसिक

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

क्रिया-कलाप ज्यादा पाये जाते हैं। उपन्यासों में प्राप्त यही प्रत्यय उन्हें उपन्यासों की अन्य कोटियों से भिन्न रखता है तथा वे मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहलाते हैं। मन अदृश्य है, अस्पष्ट है, विवादास्पद एवं अनुमानित है। उसकी स्थिति का पता मनुष्य के व्यवहार से लगता है। इसका विश्लेषक जो विज्ञान है उसे मनोविज्ञान कहा जाता है।

मार्क्स और फायड़ के सिद्धांतों ने हिंदी साहित्य को सर्वाधिक प्रभावित किया। इसके प्रभावस्वरूप हो अथवा यौन शुचिता के नैतिक आतंक से ग्रस्त भारतीय मध्यवर्गीय समाज में पश्चिमी शिक्षा दीक्षा, औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण रूढ़ियों का टूटना हो, हिंदी में मनोवैज्ञानिक उपन्यास की धारा चल पड़ी। हिंदी उपन्यासों में वर्णित पात्र हमारे आसपास के जन जीवन में ही बिखरे पड़े हैं। साहित्य मूलत: सामाजिक चरित्रों, पात्रों और परिवेश का ही कलात्मक प्रतिबिंब होता है अत: कहीं पर हीन मनोवृत्ति के पात्र या चरित्र नजर आते हैं तो कहीं पर उच्च मनोग्रन्थि के। मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन से तात्पर्य, इड़िपस ग्रंथि, लिबिड़ो या अतृत्प वासनाओं का चित्रण नहीं है बल्कि किसी पात्र या चरित्र विशेष का आक्रमक रुप, असहाय रुप, उदात्त रुप हमें विक्षुब्ध भी करता है और चमत्कृत भी।

3.3 **मनोविज्ञान : अर्थबोध, परिभाषा**

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अनेक नई शाखाओं का उद्भव हुआ है, उनमें मनोविज्ञान शीर्षस्थ है। मनोविज्ञान ने मानव जीवन को बहुत दूर तक प्रभावित किया है। इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। मानव की विभिन्न परिस्थितियों एवं व्यवहारों का अध्ययन मनोविज्ञान करता है। हिंदी में मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी के 'साइकॉलाजी' शब्द के पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त हुआ है।

समसामाजिक युग यांत्रिकता, कुंठा, संत्रास और घुटन से भरा युग है। अतः मानव जीवन इसमें उलझकर रह गया है। मानव की उलझन को सुलझाने का कार्य मनोविज्ञान करता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज के कुछ नीति-नियम हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते उन नीति-नियमों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है। समाज व्यक्ति के कुछ व्यवहारों को उचित और कुछ को अनुचित मानता है। व्यक्ति अपने व्यवहार को

उचित रूप प्रदान करने के लिए जानना चाहता है कि वह समाज की दृष्टि से मानव के किस व्यवहार को उचित और किस व्यवहार को अनुचित माने। मानव जिज्ञासु प्राणी है। वह जानना चाहता है कि उसके विशिष्ट अनुभव और व्यवहार के पीछे कौन से कारण विद्यमान है? मनुष्य की इस जिज्ञासा का शमन मनोविज्ञान करता है, क्योंकि मनोविज्ञान मानव मन से संबंधित है और इसमें मनुष्य की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन प्रमुख है।

प्रारंभ में मनोविज्ञान को आत्मा, मन तथा चेतना के विज्ञान के रूप में देखा गया, परंतु तीनों के वस्तुगत स्वरूप के अभाव में वे विचारधाराएँ ज्यादा दिन नहीं चल पायी। आगे चलकर ठोस रूप में मनोविज्ञान 'व्यवहार के विज्ञान' के रूप में सामने आया। वर्तमान भारत में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो मनोविज्ञान से प्रभावित न हुआ हो। मानव जीवन से जुड़ी हर समस्या का अध्ययन और समाधान मनोविज्ञान करता है। चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या शिक्षा क्षेत्र, विधि क्षेत्र या सैन्य क्षेत्र हर क्षेत्र में मनोविज्ञान अपना अस्तित्व प्रमाणित कर चुका है।

दरअसल पूर्वी तथा पश्चिमी दर्शनों में मनोविज्ञान से संबंधित विविध तथ्य पाये जाते हैं। 17 वी शती में आधुनिक विज्ञान का जन्म हुआ जिसके चलते मनोविज्ञान के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण चल पड़ा और वह दर्शन से अलग हुआ। 17 वी शती के बाद न्यूटन, केटलर, गैलीलियो आदि वैज्ञानिकों द्वारा आधुनिक विज्ञान का स्वरूप निश्चित होने पर मनोविज्ञान को मानव मन के मौलिक सिद्धांतों की पृष्ठभूमि में व्यावहारिक रूप में समझने का प्रयास हुआ और मनोविज्ञान की श्रृंखला में गिना जाने लगा।

ननोविज्ञान 'मन' का विज्ञान है। यह मानव मन की विभिन्न दशाओं का अध्ययन प्रस्तुत करता है। कतिपय विद्वान इसे 'मानव-जिज्ञासा का प्रतिफल' मानते हैं। कारण स्पष्ट है- मानव एक विचारशील प्राणी है। वह इस दृश्यमान जगत को जानना और समझना चाहता है। हर चीज को लेकर उसके मन में प्रश्न उठते हैं। परिणामस्वरूप अपना सारा ध्यान वह उनका हल ढूँढने में लगा देता है। मानव की इसी प्रक्रिया को मनोविज्ञान कहा जा सकता है।

मनोवैज्ञानिकता की परिभाषा :

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है अर्थात मन का विशिष्ट एवम् व्यवस्थित ज्ञान। विज्ञान की रीति–नीति और दृष्टिकोन को स्वीकार करने से 'मन' का ज्ञान 'व्यवस्थित' हो गया है। आज इसका क्षेत्र काफी विस्तृत और समृद्ध है। इससे जुड़े अनेकों विद्वानों ने इसे अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है।

मनोविज्ञान के कोशगत अर्थ– ''मानव मन की आत्मा अथवा मन की प्रकृति, प्रकार्यों एवं परिदृश्य का विज्ञान।''[3]

मनोविज्ञान : ''वह विज्ञान या शास्त्र है जिसमें मनुष्य के मन, उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा क्रियाओं उस पर पड़ने वाले प्रभावों आदि का अध्ययन तथा विवेचन होता है।''[4]

हेनरी गॅरेट के अनुसार :

''मनोविज्ञान 'मन' का अध्ययन करनेवाला विज्ञान है अथवा वह प्रमुखतया मानसिक गतिविधियों से संबद्ध है।''[5] इस परिभाषा के अनुसार मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। परंतु उसका संबंध जितना मानव मन से है उतना ही उसकी सामाजिक गतिविधियों से है।

नारमन एल मन के अनुसार :

''मनोविज्ञान हमारे जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को छूता है। जैसे ही समाज उत्तरोत्तर जटिल बनता जा रहा है, वैसे मनुष्य की समस्याओं को सुलझाने में मनोविज्ञान की अहम् भूमिका बढ़ती ही जा रही है। मनोविज्ञानिक इन समस्याओं के कई विस्मयकारी प्रकारों को लेकर चिंतित है। इनमें से कुछ समस्याएँ मूलभूत एवं वास्तविक व्यावहारिक है।''[6]

चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार :

''मनोविज्ञान मानव जीवन की हर स्थिति पर होने वाली प्रतिक्रिया का अध्ययन करता है।''[7]

डॉ. गणेश दत्त गौड़ के अनुसार :

"मनोविज्ञान मानव जीवन का पर्यवेक्षण करता हुआ तत्संबंधी भावों एवं विचारों के अव्यक्त रूप को व्यक्त करता है।"[8]

डॉ. गुरूदयाल बजाज के अनुसार :

"मनोविज्ञान बाहरी-भीतरी दबाओं एवं प्रभावों के अधीन व्यक्ति के मन के ज्ञान-अज्ञान पक्षों, अनुभूतियों, क्रिया-प्रतिक्रियाओं, प्रभावों इत्यादि का विश्लेषक शास्त्र है।"[9]

डॉ. मिथलेश रोहतगी के अनुसार :

"मनोविज्ञान मन संबंधी विशिष्ट ज्ञान का प्रस्तोता है। मन अदृश्य, अस्पष्ट, अस्पृश्य, विवादास्पद, और अनुमानित है। मनः स्थिति का विश्लेषक व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। अतः मनोविज्ञान मनुष्य-जीव के व्यवहार का विश्लेषक है।"[10]

डॉ. मधुकर जैन के अनुसार :

"मनोविज्ञान एक विकासशील अध्ययन प्रक्रिया है जिसके आधार पर मन की गतिविधियों को कार्यकारण शृंखला से बांधने का प्रयास किया जाता है।"[11]

डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त के अनुसार :

"मनोविज्ञान वह विषय है जिसमें मानसिक पक्ष से संबंधित तथ्यों व तत्वों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत किया जाता है।"[12]

लालजीराम शुक्ल के अनुसार :

"मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मन की चेतन और अचेतन क्रियाओं का अध्ययन अपरोक्ष अनुभूति द्वारा तथा मनुष्य की बाह्य-क्रियाओं का निरीक्षण करता है।"[13]

प्लेटो :

"मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है।"[14] प्लेटो मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानते हैं, परंतु वर्तमान परिस्थिति में सायन्स के निकष पर आत्मा का अस्तित्व ही ग्राह्य नहीं माना जाता।

जेम्स :

"मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा यह दी जा सकती है कि वह चेतना की स्थिति या अवस्था एवं विवेचना प्रस्तुत करनेवाला विज्ञान है।"[15]

मैकूगल :

"मनोविज्ञान मानव मन का विज्ञान है।"[16]

पिल्सवरी :

"मनोविज्ञान की सर्वाधिक संतोषजनक परिभाषा यह की जा सकती है कि वह मानव- व्यवहार का विज्ञान है।"[17]

वुडवर्थ :

"मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो व्यक्ति के क्रियाकलापों का अध्ययन वातावरण के संदर्भ में करता है।"[18]

उपर्युक्त विविध परिभाषाओं को देखकर मनोविज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता और उसके विस्तार का पता चलता है। अतः इन परिभाषाओं को दृष्टिपथ में रखते हुए निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि- "मानव मन और उसके व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान ही मनोविज्ञान है।"

3.4 **मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण :**

मनोविज्ञान, विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत व्यवहार, कार्यो या मानसिक प्रक्रियाओं और उनको करने वाले मन या व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है। 19 वीं शती तक इसका अध्ययन दर्शन के अंग के रूप में होता रहा हालांकि 20 वीं शती में यह दर्शन की अधीनता से मुक्त होकर स्वतंत्र अस्तित्व का अधिकारी बना। मनोविज्ञान की मौलिक मान्यता है कि मन और शरीर परस्पर निरपेक्ष हैं, पर उनमें निरंतर क्रिया - प्रतिक्रिया चलती रहती है। अत: शरीर से पृथक मन का तथा मानसिक व्यापारों का अध्ययन संभव ही नहीं, संगत भी है।

मनोविश्लेषण, मनोविज्ञान की एक शाखा है। यह अपने प्रमुख और प्रारंभिक रूप में मानसिक और स्त्रायविक रोगों की चिकित्सा की विशेष विधि है, जिसके आसपास मनोवैज्ञानिक सिद्धातों का संघटन होता है। यह फ्रायड़ द्वारा प्रतिपादित 'चिकित्सा मनोविज्ञान' का एक गत्यात्मक संप्रदाय है जिसमें मनोविकारों की उत्पत्ति, विकास, व्याख्या और चिकित्सा में अचेतन स्मृतियों और आवेगों, दमित शैशवी कामुकता के महत्त्व पर विशेष बल दिया जाता है। यह स्वतंत्र साहचर्य आदि उपायों द्वारा मानसिक विश्लेषण कर रोगी की मनचिकित्सा करने की एक विशेष प्रणाली है। फ्रायड़ द्वारा अन्वेषित इस मानसिक चिकित्सा विधि के अंतर्गत मानसिक रोगों का उपचार सरलता से किया जा सकता है और इसका प्रभाव स्थायी होता है। मनोविश्लेषण के प्रवर्तक के रूप में फ्रायड़ का नाम मुख्य रूप से सामने आता है। मनोविश्लेषण शब्द दो अर्थों का बोधक है एक तो उस प्रविधि या प्रक्रिया का जिसका फ्रायड़ ने मानव मन की छानबीन में उपयोग किया है और दूसरे, उस सिद्धांत समूह का जो छानबीन के क्रम में प्राप्त तथ्यों से निर्मित हुआ है। सामान्यत: मनोविज्ञान प्रक्रिया को जब किसी व्यक्ति, परिवेश आदि के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त किया जाता है, तो उसे मनोविश्लेषण की संज्ञा दी जाती है।

3.5 मनोवैज्ञानिकता का अर्थविस्तार :

मनोवैज्ञानिकता का अर्थविस्तार अत्यंत व्यापक है। मानव मन अत्यंत जटिल है और उसके व्यवहार भी जटिल है। मानव व्यवहार में विचित्रता, विक्षिप्तता होती है। इन विचित्रिताओं और विक्षिप्तताओं के कारण जानकर उनका हल उपस्थित करना मनोविज्ञान का कार्य है। मानव व्यवहार में व्याप्त प्रत्येक क्रिया-प्रतिक्रिया का अध्ययन विश्लेषण मनोवैज्ञानिकता का उद्देश्य है। मानव व्यवहार का भविष्य में क्या रूप होगा इसका पता लगाना और मनुष्य के व्यवहार पर नियंत्रण रखना मनोविज्ञान का कार्य है। मनोवैज्ञानिकता मानव के क्रोध के कारणों की खोजबीन कर उसे दूर करने का प्रयास करता है।

मनोवैज्ञानिकता के क्षेत्र में बालकों तथा निम्न स्तर के जीवधारियों का अध्ययन भी समाविष्ट होता है। मानव के असामान्य व्यवहार का अध्ययन मनोवैज्ञानिकता करती है। विद्वान 'जीन पिगेट' ने मनोवैज्ञानिकता के विस्तार पर सूक्ष्मता से दृष्टिपात किया है। वे

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR.

कहते हैं- ''मनोवैज्ञानिकता प्राणी के समस्त गतिविधियों तथा स्थितियों, शिक्षा, शारीरिक परिवर्तन तथा मनः चिकित्सा, मानसिक आरोग्य कार्य तथा सभी प्रकार के व्यावसायिक स्कूलों एवं वृत्ति चयन एवं मार्गदर्शन इत्यादि क्षेत्रों सें संबंद्ध है।''[19]

निष्कर्षतः कहा जाता है कि वर्तमान युग में मनोवैज्ञानिकता एक विधायक विज्ञान के रूप में उपयुक्त सिद्ध हो रहा है, जिसमें व्यक्ति की दैहिक, मानसिक क्रियाएँ सम्मिलित है। अतः डॉ. शिवराम माली का मत उचित जान पड़ता है कि- ''साहित्य मनोभावाभिव्यक्ति का प्रस्फुटन है जिससे उसके साथ मनोवैज्ञानिकता का चोली-दामन सा संबंध है।''[20]

3.6 **प्रमुख संप्रदाय :**

मनोवैज्ञानिकता ने दर्शन शास्त्र से लेकर वैज्ञानिक स्वरूप पाने तक की अपनी यात्रा में काफी उतार चढ़ाव देखे हैं। अतः यहाँ उन्हीं संप्रदायों का उल्लेख किया जा रहा है जो 19 वी - 20 वी शती में निर्मित हुए तथा जिनसे लोक संस्कृति, कला और साहित्य प्रभावित हुए।

संरचनावाद :

इस संप्रदाय की स्थापना लिपजिंग में 1879 में वुंट के कार्यों से हुई। उक्त संप्रदाय के अंतर्गत ''मनोवैज्ञानिकता को 'चेतना का विज्ञान' माना गया तथा चेतना अनुभवों को मनोविज्ञान की विषय वस्तु स्वीकार किया गया। इन्होंने बताया कि भाव, संवेग एवम् प्रतिभा के मिलने से चेतना का निर्माण होता है।''[21] चेतन अनुभूतियों के अध्ययन हेतु संरचनावादियों ने आत्मगत विधि ढूँढ़ निकाली। इसके संस्थापक वुंट के 'अन्तदर्शन' को काफी प्रतिष्ठा मिली।

प्रक्रियावाद :

वुंट के शिष्य कैटल ने चेतना को नजरअंदाज करते हुए जीवन की विभिन्न दैनिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं जैसे व्यक्तिगत-विभिन्नता एवम् प्रतिक्रिया-काल का अध्ययन किया। डर्बिन का विकासवाद तथा जेम्स का परिणाममूलक दर्शन इसके मूल स्त्रोत रहे हैं।

इसी से बाल मनोविज्ञान, मानसिक परीक्षणों का मनोविज्ञान तथा शिक्षा मनोविज्ञान का उदय हुआ।

व्यवहारवाद :

व्यवहारवाद मनोवैज्ञानिकता का वह संप्रदाय है जिसमें प्रतिक्रियाओं के बाह्य अध्ययन की महत्ता पर मूल रूप से बल दिया गया है। 1913 ई. मे जे.बी.वाटसन ने अमरीका में इसकी स्थापना की। उन्होंने उद्दीपन-अनुक्रिया मनोविज्ञान का निर्माण किया।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान :

इसके अंतर्गत ''मनोवैज्ञानिक घटनाओं के अध्ययन में उसकी संपूर्णता, अविभाज्यता और अखंड़ता पर जोर दिया जाता है।''[22] इसकी शुरूआत 1912 ई. में मैक्स बर्दाइमर के गति-प्रत्यक्षीकरण पर प्रकाशित शोध लेख से हुई। इस सिद्धांत का निरूपण 'शिक्षा' एवम् 'सज्ञान-विवेक' आदि क्षेत्रों में हुआ। शिक्षा क्षेत्र में उपयोग में लाने के कारण हो अंतदृष्टि सिद्धांत का निर्माण हुआ तथा विचार-क्षेत्र में इसके प्रयोग से 'रचनात्मक विचार' के सिद्धांत का निर्माण हुआ।

मनोविश्लेषण-फ्रायड़ :

''मनोविश्लेषण सिग्मंड़ फ्रायड़ द्वारा प्रतिपादित मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें मनोविकारों की उत्पत्ति, विकास, व्याख्या और चिकित्सा में अचेतन स्मृतियों और आवेगों तथा दमित शैशवी कामुकता के महत्त्व पर विशेष बल दिया जाता है।''[23] फ्रायड़ के सिद्धांतों से प्रभावित होकर अन्य विद्वान और चितंक भी इससे जुड़े। फ्रायड़ को अपने सैद्धांतिक विचारों एवम् प्रचलित धारणाओं में परस्पर विरोधी तत्व पाये जाने तथा लैंगिक तत्वों को अपने सिद्धांत में अत्यधिक महत्त्व देने के कारण समकालीन प्रबुद्ध वर्ग द्वारा की गयी कटु आलोचना भी सुननी पड़ी। कालांतर में यह प्रतिरोध शिथिल हुआ और लोगों के मन में मनोविश्लेषण के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई। अत: काफी लोग इसे जाने-समझने के प्रयत्न में लगे रहे धीरे-धीरे कला और साहित्य भी इस सिद्धांत से प्रभावित

हुआ। कहना गलत न होगा कि समकालीन संप्रदायों की तुलना में फ्रायड़ के मनोविश्लेषण के मूलभूत सिद्धांतो की आज भी व्यावहारिक उपयोगिता है।

मनोवैज्ञानिकता के प्रमुख रुप :

भाव अथवा मनोभाव मन, ह्दय या अंत:करण में उदय होते हैं। उनकी अभिव्यक्ति के माध्यम मुख और नेत्र है। मुख के द्वारा व्यक्त भाव कृत्रिम भी हो सकते हैं किंतु आँखें सब कुछ प्रकट कर देती हैं। आज कल कृत्रिमता का युग है। इस कृत्रिम युग में व्यक्ति के वचन, कार्य व्यापार तथा नेत्रों के माध्यम से मनोभावों की पहचान की जानी चाहिए। उपन्यास में पात्रों के क्रिया कलाप, आचरण व्यवहार तथा उनके द्वारा व्यक्त विभिन्न प्रतिक्रियायों का विवेचन स्थूल तथा सूक्ष्म मनोभावों का सप्रसंग एवं सकारण विश्लेशण किया जाता है।

बाल-मनोभाव :

शिशु का मन सफेद कागज की भाँति स्वच्छ होता है। अनुभव उस सफेद कागज रूपी मन पर चिह्न अंकित होते हैं। बाल्यावस्था निर्दोष और क्षमाशील होती है। उसका स्वभाव निर्मल जल जैसा पवित्र होता है। शैशव काल में बच्चों को अपनत्व, प्यार, स्नेह की भूख के अतिरिक्त पेट की भूख भी लगती है। उनमें कृत्रिमता का अभाव रहता है। अपने से बड़ों के कृत्यों तथा प्रकट भावों का अनुकरण करने की तीव्र उत्कंठा रहती है। उनमें कोई भी ऐसी मानसिक स्थिरता नहीं रहती जिससे उसके मनोभाव स्पष्ट रूप से व्यक्त हों। बाल्यावस्था में मनोभाव बीज रूप में उदित होते हैं, जो बाद में आयु वृद्धि के साथ साथ स्पष्ट रूप से विकसित होते जाते हैं।

किशोर-मनोभाव :

किशोरावस्था बाल्यावस्था से संयुक्त रहता है। यह व्यक्ति के जीवन का संक्रमण-काल होता है। बालक की अपेक्षा किशोरों-किशोरियों में मनोभावों का स्थायित्व क्रमबद्ध रूप में वर्तमान रहता है। उनमें किसी नई वस्तु कार्य विचार के प्रति कौतुहल एवं जिज्ञासा होती है। मनोवैज्ञानिकों ने इस भाव को मनुष्य के मूलभूत मनोभावों में माना है। किशोर मन

किसी भी तथ्य अथवा बात को सहज रूप में विश्वास कर लेता है। सहज मन के कारण उसमें सदा उल्लास के मनोभाव बने रहते हैं। उसे संरक्षक अथवा पालक की परिस्थितियों से कोई सरोकार नहीं होता। इच्छानुकूल वस्तु की ही उसे अपेक्षा रहती है। वह समवयस्कों से मैत्री की कामना रखता है। इसी कारण किशोरावस्था की आयु में मैत्री की भावना अधिक होती है। वह दया और सहानुभूति का भूखा होता है। स्वाभिमान के मनोभाव तीव्रता के साथ उचित और परिपक्व होते जाते हैं। वह स्वभावत: लज्जालु होता है। साथ ही अन्याय न सहन करने की प्रवृत्ति होती है। इसलिए अपने मनोनुकूल कार्य अथवा अवस्था न होने पर वह विद्रोही मनोभाव व्यक्त करता है। वह समवयस्कों को चिढ़ाने, उनपर व्यंग करने में रुचि रखता है। इसके पीछे मैत्री और सान्निध्य प्राप्त करने की भावना छिपी रहती है।

युवा मनोभाव :

युवा पात्र - पात्राओं के मनोभाव शारीरिक गठन के पर्याप्त अंतर हो जाने के कारण भिन्न हो जाते हैं। किशोरावस्था की उत्तरार्ध-स्थिति युवा-काल को निमंत्रण देनेवाली है। किशोरावस्था में शारीरिक अक्षमता के कारण अनेक ऐसे कुतूहल होते जिनकी पूर्ति नहीं होती। वह युवा अवस्था में क्षमता आने पर अपनी जिज्ञासा की पूर्ति करता है। उसमें अपने सहयोगी मित्र के प्रति ममत्व का भाव होता है। इसके लिए आयु की सीमा बाधक नहीं होती चाहे वह युवक हो या वृद्ध, उसके निकट रहने वाला स्नेहभाजन बनता है। मित्र की सहायता करने में उसे आत्मतुष्टि मिलती है। युवक आत्मसम्मान के लिए मर मिटने को तत्पर हो जाता है। वह अपने स्वत्व की रक्षा के लिए सदा सजग रहता है। युवक कर्मठ और सक्षम होने के कारण समाज में व्यवस्था और न्याय का पक्षपाती होता है। दुर्व्यवस्था अथवा अन्याय को सहन करने की प्रवृत्ति युवक में नहीं होती। युवक इतना भावुक होता है कि उससे व्यावहारिकता का ध्यान नहीं रहता। वह अपने मन की बात बिना किसी हिचकिचाहट के प्रगट कर देता है।

यदि वास्तव में किसी स्त्री से युवक प्रेम करता है तो वह उसके शारीरिक बनावट को ही नहीं देखेगा, बल्कि उसकी मुस्कान, उसकी चाल-ढाल, उसका चरित्र, उसकी आत्मा और उसकी इमानदारी आदि आंतरिक वृत्तियों से भी प्रेम करेगा। एक मानव अनेक अंगों का

योग होता है। सच्चा प्रेम शरीर और आत्मा में विभेद नहीं करता। युवक माँ के प्रति सम्मान का भाव रखता है, भाई के प्रति स्नेह-भाव छोटे बच्चों के प्रति वात्सल्य के मनोभाव रखता है। किंतु पाश्चात्य प्रभाव से युक्त युवकों में इसका अभाव दिखाई देता है।

युवती स्वाभाविक रूप से करुणा की स्त्रोतास्विनी होती है। वह व्यक्तिगत कल्पना संसार की सृष्टि के मनोभावों से युक्त होती है। करुणा, दया और ममता युवती के मुख्य गुण हैं। वह कठोर मनोभाव को पसंद नहीं करती। प्रतिहिंसा की भयावह स्थिति के भावों से अलग रहना चाहती है। युवावस्था में प्रेम मुख्य मनोविकार है, किंतु वह जन्मजात प्रवृत्ति नहीं है बल्कि शारीरिक विकास का परिणाम है। विवाहित स्त्री तथा अविवाहित स्त्री के प्रेम संबंधी मनोविकारों में अंतर आ जाता है। विवाहित स्त्री सामाजिक रूप से अपने पति से प्रेम करने के लिए उन्मुक्त हो जाती है। किंतु अविवाहित युवती पर प्रेम संबंधी अंकुश परिवार और समाज दोनों का लगा रहता है। युवती पुरुष से निकटतर संपर्क करना चाहती है। वह सदा निकट रहकर सुख की अनुभूति करती है। यही उसके प्रेम का स्वरूप है। वह युवक प्रेमी से मान करती है, क्रोध करती है, किंतु उसके पीछे उसका अगाध प्रेम उमड़ता है। उसका प्रेम एकनिष्ठ होता है। युवती मानसिक और शारीरिक रूप से समर्पण करती है। युवती पुरुष का प्रत्येक क्षण संपर्क चाहती है। युवती में अपनी मर्यादा-रक्षा का भाव प्रबल रूप में विद्यमान रहता है। अपने रूप और सौंदर्य पर उसे गर्व रहता है। वर्तमान विकास युग में बुद्धिजीवी युवती में अन्याय के प्रति विद्रोह का भाव भी प्रबल रूप में पाया जाता है।

प्रौढ़-प्रौढ़ा के मनोभाव :-

प्रौढ़-प्रौढ़ा के मनोभावों में मुख्य रूप से वात्सल्य के भाव अपनी संतान के प्रति विशेष रूप से उदित होते हैं। युवा अवस्था में संतान को जन्म देकर उसके भविष्य की चिंता इस आयु में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। जाति, गरीबी-अमीरी, किसी भी स्थिति में प्रौढ़-प्रौढ़ा के वात्सल्य मनोभाव में अंतर नहीं आता। वे ढलती हुई शारीरिक क्षमता की संतान द्वारा अपूर्ति की आकांक्षा करने लगते हैं। संतान के किशोर या युवा हो जाने के कारण प्रौढ़-प्रौढ़ाओं के आपसी प्रणय भाव मर्यादित हो जाते हैं, क्योंकि खुले रूप से युवा संतान के समक्ष ऐसे कृत्य करने से उनमें दूषित विचार उत्पन्न होने का उन्हें भय हो जाता है।

प्रौढ़-प्रौढ़ा में शारीरिक सौंदर्य एवं वासना की भूख सीमित हो जाती है। इस आयु में ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और प्राय:श्चित आदि के मनोभाव विशेष रूप में जाग्रत होते हैं।

वृद्ध-वृद्धा के मनोभाव:-

प्रौढ़-प्रौढ़ा के वात्सल्य के मनोभाव वृद्धावस्था में परिपक्व हो जाते हैं। अपने पुत्र-पुत्रियों के प्रति स्नेहल मनोभाव का व्यावहारिक रूप उनकी संतानों की ओर उन्मुख हो जाता है। स्वाभाविक रूप से दूसरी संतानों के प्रति भी उनका स्नेह भाव अपनी संतानों जैसा ही हो जाता है। प्रौढ़ की अपेक्षा वृद्धों में काम भाव नही के बराबर रह जाता है। ईर्ष्या और द्वेष आदि असामान्य मनोभावों में वृद्धि हो जाती है। उनमें चिड़चिड़ाहट, बकझक अधिक बढ़ जाती है। अपने से छोटों को अपने अनुभवों के आधार पर चलने के लिए बाध्य करने की मनोवृत्ति बन जाती है। वृद्ध में संपत्ति, परिवार और निज की सुरक्षा के मनोभाव तीव्र हो जाते हैं। मृत्यु की आसन्न स्थिति में वृद्ध के मन में जीवन भर किये गये पाप कर्मों के प्रायश्चित हेतु चिंता के मनोभाव उदित होते हैं। पारिवारिक जीवन में अपने से छोटों के द्वारा किये जाने वाले दुर्व्यवहार की तपन में वह जलने लगता है। क्षमा, करुणा और ममता के मनोभाव वृद्धावस्था की अपनी निजी विशिष्टता है।

3.7 **मनोवैज्ञानिकता के प्रकार :**

मनोवैज्ञानिकता मानव व्यवहार का विज्ञान है। मानव व्यवहार के प्रमुखत: दो रूप लक्षित होते हैं। विद्वानों ने मानव व्यवहार को सामान्य और असामान्य दोनों रूपों मे स्वीकृत किया है। मनोवैज्ञानिकता का संबंध केवल मानव के आदर्श, संतुलित समायोजित व्यवहार से है। अत: मानव के सामान्य, असामान्य दोनों रूपों का अध्ययन मनोवैज्ञानिकता की परि में आता है। डॉ. सरयुप्रसाद चौबे के मतानुसार - "सामान्य और असामान्य व्यवहार के बीच कोई स्पष्टत: रेखा नहीं खींची जा सकती, क्योंकि इसे ठीक-ठीक परिभाषिक नहीं किया जा सका है। कोई भी व्यक्ति अपने व्यवहार में न तो विशुद्धत: सामान्य है और न विशुद्धत: असामान्य, अर्थात, प्रत्येक व्यक्ति कभी कभी सामान्य और असामान्य दोनों प्रकार का व्यवहार दिखलाता है।"[24]

डॉ. नरनारायण राय का कहना है कि, ''मनोविज्ञान के बढ़ते हुए विश्लेषण ने व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों का अध्ययन कर यह स्पष्ट कर दिया है कि हर व्यक्ति अपने जीवन-व्यवहारों में कहीं असामान्य होता है और इसके व्यवहारों एवं आचरणों में संगति नहीं होती।''[25]

सामान्य व्यवहार :

सामान्य व्यवहार सामान्य ढंग का होता है। जो व्यक्ति अपने दैनंदिन क्रियाओं को विचारपूर्वक ढंग से करता है, वास्तव में वही व्यक्ति सामान्य व्यक्ति है और उसका व्यवहार सामान्य व्यवहार है।

असामान्य व्यवहार:-

डॉ. लाभसिंह, डॉ. गोविंद तिवारी के अनुसार असामान्य व्यवहारवाले व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से भिन्न होते हैं। अपने विचारों को ये व्यक्ति समझ नहीं पाते और न ही दूसरों को समझा पाते हैं। असामान्य व्यवहारवाले व्यक्ति सीमित बुद्धि, अस्थिर संवेग, असंगठित व्यक्तित्व, दूषित चरित्रवाले होते हैं। असामान्य व्यवहार में समायोजन की अपेक्षा असमायोजन तत्व क्रियाशील रहता है।

सामान्य मनोविज्ञान :

सामान्य व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करनेवाले विज्ञान को सामान्य मनोविज्ञान कहते हैं। डॉ. सरयु चौबे के अनुसार- ''जिस व्यक्ति में रचनात्मक संभावनाएँ विद्यमान रहती है उसे सामान्य व्यक्ति कहा जा सकता है।''[26] अत: सामान्य व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन, उसके व्यवहार का निरीक्षण परीक्षण करते हुए कुछ तथ्य एकत्रित करना और उन तथ्यों का वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकरण करते हुए सामान्य नियमों की स्थापना करना सामान्य मनोविज्ञान की परिधि में आता है।

असामान्य मनोविज्ञान :

डॉ. लाभसिंह, डॉ. गोविंद तिवारी के अनुसार ''असामान्य मनोविज्ञान उन व्यक्तियों का अध्ययन करता है, जिनके व्यवहार में सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा कुछ विशेषताएँ होती

हैं।"[27] साहित्य और मनोविज्ञान का घनिष्ठ संबंध होता है और मानव के असामान्य व्यवहार के अध्ययन का एक क्षेत्र असामान्य मनोविज्ञान है। मानव के असामान्य व्यवहार का अध्ययन करनेवाले विज्ञान के असामान्य मनोविज्ञान की संज्ञा दी जाती है। असामान्य व्यवहार का अध्ययन करते समय एक मनोवैज्ञानिक उसके असामान्य व्यवहार मौलिक कारणों को ढूँढ़ता है तथा उन्हें दूर करने का भी प्रयत्न करता है। असामान्य मनोविज्ञान उन प्रकारों का अध्ययन करता है जो प्राय: सामान्य व्यक्ति में नहीं पाये जाते।

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान :-

"मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें व्यवहार अथवा मन के क्रिया-व्यापार का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाता है तथा व्यवहार के प्रसंग में उत्तेजना-प्रतिक्रिया के पारस्परिक संबंध पर विशेष जोर दिया जाता है, 'प्रयोगात्मक मनोविज्ञान' कहलाता है।"[28] इसके अंतर्गत सामान्य व्यक्तियों की संवेदना एवम् प्रत्यक्षण् भाव और संवेग, अवधान, स्मृति एवम् सीखना तथा उनके विचार एवम् उच्च मानसिक क्रियाओं का विशेष अध्ययन किया जाता है।

दैहिक मनोविज्ञान :

"दैहिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें विषय अनुक्रियाओं के शारीरिक आधार का पता लगाया जाता है। यह तंत्रिका-विज्ञान और मनोविज्ञान की सीमारेखा है।"[29] मस्तिष्क की बनावट तथा उसके कार्य, अधिगम, प्रेरणा तथा संवेग आदि में शारीरिक आधार की व्याख्या, "दैहिक मनोविज्ञान" के प्रमुख अध्ययन विषय है।

तुलनात्मक मनोविज्ञान :

"मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें प्राणियों के विभिन्न प्रजातियों या मनुष्य की विभिन्न जातियों या व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं की मानसिक क्रियाओं या व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, 'तुलनात्मक मनोविज्ञान' कहलाती है।"[30] इसमें विभिन्न प्रकार के जीवों के समायोजन, सामर्थ्य और व्यक्तित्व की समरूपताओं और भिन्नताओं का अध्ययन

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

किया जाता है। साथ ही पशुओं के व्यवहार के अध्ययन से प्राप्त परिणामों की तुलना मानवीय व्यवहार से की जाती है।

बाल मनोविज्ञान :

"मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें बच्चों के शारीरिक एवम् मानसिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है 'बाल मनोविज्ञान' कहलाती है।"[31] इसके अंतर्गत सामान्य एवम् असामान्य दोनों ही प्रकार के बालकों का अध्ययन किया जाता है जो सैद्धांतिक भी हो सकता है और अनुप्रयुक्त भी। इसमें बालक के विकास को वंश परंपरा तथा वातावरण के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। गर्भावस्था से लेकर परिपक्वावस्था तक के शारीरिक और मानसिक विकास के संबंधित सभी पक्षों का विवेचन इसके अंतर्गत होता है।

विकासात्मक मनोविज्ञान :

"मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर उसकी परिपक्वावस्था तक के क्रम में होनेवाली दैहिक, बौद्धिक, सामाजिक परिवर्तनों, कार्य-प्रणालियों, व्यवहार एवम् अनुभूतियों का वैज्ञानिक वृतांत मिलता है, 'विकासात्मक मनोविज्ञान' कहलाती है।"[32] यह सैद्धांतिक एवम् व्यावहारिक दोनों हैं। इसकी समस्याएँ काफी हद तक 'बाल मनोविज्ञान' की समस्याओं से मेल खाती हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान :

"शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें शिक्षा-संबंधी केवल मनोवैज्ञानिक अन्वेषण और सिद्धांतों का ही अध्ययन नहीं होता प्रत्युत शिक्षक, शिक्षार्थी और उनके पारंपारिक संबंधों से उत्पन्न होनेवाली अन्यान्य समस्याओं का भी मनोवैज्ञानिक अध्ययन होता है।"[33] शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण और समुचित विकास करना तथा उसे उसके वातावरण के प्रति अधिकाधिक अभियोजनशील बनाना, 'शिक्षा मनोविज्ञान' के दो प्रमुख उद्देश्य हैं। शिक्षा मनोविज्ञान की समस्याओं में बच्चों की जन्मजात क्षमताएँ, मूल प्रवृत्तियाँ, सहज प्रवृत्तियाँ, धातु स्वभाव, प्रेरक, व्यवहार-नियंत्रक, संवेग और स्थायी भाव आदि व्यवहार संबंधी समस्याएँ, अर्जन संबंधी - अभ्यास प्रेरक, सीखने की विधियाँ,

सीखने का स्थानांतरण और विषयों की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ आदि तथा व्यक्तिगत भिन्नताओं से संबंधित व्यक्ति की वृद्धि और विकास का क्रम, विकास के विभिन्न स्तर, रूप और विशेषताएँ आदि समस्याएँ आती हैं।

समाज मनोविज्ञान :-

"व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं का एक सामाजिक प्राणी के रूप में वैज्ञानिक अध्ययन ही 'समाज मनोविज्ञान' कहलाता है"[34] इसके अतिरिक्त प्रचार, अभिवृत्तियाँ, नेतृत्व, फैशन, भीड़ तथा सामाजिक प्रेरणाओं आदि का भी अध्ययन 'समाज मनोविज्ञान' में किया जाता है। आज यह इतना आगे बढ़ चुका है कि मानसिक बीमारियों के सामाजिक कारणों का पता भी इसके अंतर्गत लगाया जा सकता है।

औद्योगिक मनोविज्ञान :

"मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें उसकी अध्ययन प्रणालियों और उसके संप्रत्ययों तथा सिद्धांतों के आधार पर विविध औद्योगिक समस्याओं का वैज्ञानिक अनुशीलन करके उससे प्राप्त निष्कर्षों का अनुप्रयोग उत्पादन क्षमता और दक्षता बढ़ाने में किया जाता है, 'औद्योगिक मनोविज्ञान' कहलाती है। औद्योगिक मनोवैज्ञानिक को समय-समय पर किसी श्रमिक के लिए उपयुक्त व्यवसाय और किसी व्यवसाय के लिए उपयुक्त श्रमिक का चयन करना, श्रमिक की परीक्षा लेकर कार्यगति का विवरण रखना, पूँजीपति और श्रमिक में सहानुभूति बनाये रखने के लिए वातावरण उत्पन्न करना, सफल विज्ञापन करना और विक्रेता के आवश्यक गुणों पर विचार करना आदि रूपों में कार्य करना पड़ता है। थकान, अरोचकता, हड़ताल, तालाबंदी, दुर्घटना आदि की समस्याओं से छुटकारा दिलाने की दृष्टि से भी कार्य करना पड़ता है।"[35]

नैदानिक मनोविज्ञान :

"नैदानिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें मनोविकारों के निदान, उपचार एवम् रोकथाम के लिए अनुसंधान किया जाता है तथा प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें रोगी अपना समायोजन अच्छी तरह कर सके तथा अपनी बात धड़ल्ले से कह सके।"[36]

सांवेगिक असंतुलन, मानसिक रोग, बाल अपराध, मानसिक पिछड़ापन तथा वैवाहिक असमायोजन आदि का निदान इसमें किया जाता है।

व्यावहारिक मनोविज्ञान :

"व्यावहारिक मनोविज्ञान अपने या दूसरों के व्यवहार एवम् आचरण में वांछित परिवर्तन लाने में सहायक विज्ञान है, जिसमें अभीष्ट आचरण की दिशा में व्यक्ति की कार्य साधकता को प्रभावित करनेवाली समस्त, भौतिक, दैहिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दशाओं का अध्ययन कर व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक तथ्यों, सिद्धांतों एवम् प्रविधियाँ का उपयोग किया जाता है।"[37] मानव जीवन में अधिकाधिक सामंजस्य लाना इसका उद्देश्य है। इसमें शिक्षा, अपराध, औषधि और उद्योग-संबंधी सभी समस्याओं का समावेश है।

विधि मनोविज्ञान :

'विधी मनोविज्ञान' कानून के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका अध्ययन अधिवक्ता को साक्ष्य प्रस्तुत करने, सही न्याय दिलाने तथा कतिपय मुकादमों की सुनाई में मदद करता है।

सैन्य या सैनिक मनोविज्ञान :

"यह अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान का एक रूप है जिसमें सैनिकों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत सैनिकों के चयन, कार्य नियतन, प्रशिक्षण, अभिप्रेरण, उपस्कर तथा मनोबल की समस्याएँ आती है।"[38] सेना में पारस्परिक मानवीय संबंधों से संबंधित समस्याओं के निराकरण में यह काफी सहयोग देता है।

संदर्शन एवम् परामर्श मनोविज्ञान :

संदर्शक बाल निर्देशनवाला द्वारा जटिल, प्रत्यावर्तित बालकों के लिए औपचारिक, मानसिक और शैक्षिक व्यवस्था करता है, मानसिक विधियों द्वारा वस्तुस्थिति के आधार पर व्यक्ति की बुद्धि, योग्यता, रुचि और स्वभाव के अनुसार शिक्षा की योजना बनाता है तथा शिक्षा ग्रहण करने में मदद करता है, साथ ही व्यक्ति को उसकी रुचि तथा

योग्यता के अनुरूप व्यवसाय का चयन करने तथा उसमें प्रवेश उन्नति करने तक में सहायता करता है।

⁕ मानव मन के गत्यात्मक पहलू

मन का अर्थ :

मन शब्द का व्यवहार कई अर्थों में होता है। भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने मन संबंधी काफी चर्चा की हैं, विचार विमर्श किया है। प्रारंभ में मन को अपरिवर्तनशील माना जाता था। यह भी धारणा है कि मन जन्म से मृत्यु तक स्थिर रहता है। धार्मिक दृष्टि से भी यह धारणा विद्यमान थी कि भले ही मानव शरीर नश्वर है, परंतु उसके मन का अस्तित्व सदा रहता है।

भारतीय दृष्टिकोण से 'मन' के विभिन्न अर्थों में लक्षित किया गया है– "हृदय, प्रज्ञा, चेतना, सोच, विचार, मानस, संकल्प, कामना, इच्छा, रुचि इ.।"[39] मानव इंद्रियों में मन अत्यंत शक्तिशाली है। फ्रायड़ के अनुसार मन गत्यात्मक है। आधुनिक साहित्य में 'मन' शब्द विशिष्ट मनोवैज्ञानिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है। मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण की विकासात्मक प्रगति के साथ–साथ 'मन' की संकल्पना भी परिवर्तित हुई।

विख्यात मनोविश्लेषक फ्रायड़ के मनोविश्लेषण सिद्धांतों के अंतर्गत मानव व्यक्तित्व की दो परस्पर प्रवृत्तियाँ जीवन और मृत्यु की चर्चा की है। मानव सदैव जीवन मृत्यु की संघर्षमयी परिस्थितियों से गुजरता है। इसी संघर्ष से प्रभावित होकर इन सघर्षमयी परिस्थितियों के साथ अनुकूल समायोजन स्थापित करने के लिए ही व्यक्ति मन गत्यात्मक रूप में परिवर्तित होता है। किसी संघर्षमयी परिस्थिति का शिकार होने पर ही मन की गत्यात्मकता का ज्ञान होता है।

मन के पहलु :

"मनोवैज्ञानिक फ्रायड़ ने मन को वैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर विश्लेषित किया और मन के प्रमुख दो पहलू निर्धारित किए हैं।"[40]

गत्यात्मक पहलू :

मनोविश्लेषक फ्रायड़ के अनुसार मन के गत्यात्मक पहलू 'लिबिड़ो' के ही रूप हैं। लिबिड़ो द्वारा ही मानसिक शक्तियों का विकास होता है। सर्व प्रथम फ्रायड़ ने व्यक्तित्व अथवा मन के गत्यात्मक स्वरूप का विवेचन वैज्ञानिक ढंग से किया है। मन के गत्यात्मक पहलू के विविध रूप निम्न हैं –

इद् -

फ्रायड़ के मनोविश्लेषण सिद्धांत के अनुसार 'इद्' शब्द साहित्य में प्रविष्ट हुआ है। मन के जन्मजात पक्ष को ही फ्रायड़ ने इद् की संज्ञा दी है। इद् जीवन मृत्यु संबंधी मूल प्रवृतियों का द्योतक है। इसका सीधा संबंध मानव मन के बाह्य जगत की अपेक्षा आंतरिक मन के जगत से है। निर्मला शेरजंग के मतानुसार इद् "प्राथमिक वासनाओं का केंद्र फ्रायड़ के अनुसार मनुष्य के पशुत्व के सब गुण इसमें निहित हैं। इद् से तात्कालिक सुख और संतोष की इच्छाओं का उद्दीपन होता है। इसमें शील, संयम, नैतिकता, सामाजिकता, वास्तविकता अर्थात समय और स्थान का ज्ञान नहीं है।"[41] इस प्रकार इद् जीवन की वास्तविकता से विमुख होकर कार्य करता है।

अहम्-

फ्रायड़ के मनोविश्लेषण सिद्धांत में 'अहम्' का महत्वपूर्ण स्थान है। फ्रायड़ ने अपने मनोविश्लेषण सिद्धांत के अंतर्गत कामवृत्ति, संघर्ष, अवरोध, दमन का अंतर्भाव किया है। अहम् एक मात्र ऐसा साधन है जो बाह्य वातावरण के साथ संपर्क स्थापित करता है। इसके कार्य का संबंध भी बाह्य जगत से है। निर्मला शेरजंग के मतानुसार अहम् – "वास्तविकता और सामाजिकता के नियमों से निर्देशित मानसिक शक्ति जिसे फ्रायड़ ने अहम् के नाम से मूर्तिमान किया है।"[42]

पराहम्-

पराहम् व्यक्तित्व के नैतिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। डॉ. लाभसिंह, डॉ. गोविंद तिवारी के मतानुसार- "इसका विकास इदम् और अहम् की अपेक्षा सबसे देर में

होता है। बाल्यावस्था में इसका विकास अहम् में आत्मसात कर लेता है तथा बाद में यही परम अहम् का रूप लेता है।''[43] इस प्रकार नैतिकता और अनैतिकता के मध्य विभाजन रेखा खींचना पराहम् का प्रमुख कार्य है। निर्मला शेरजंग के मतानुसार पराहम्- ''अच्छे, बुरे, उच्च-नीच, नैतिक-अनैतिक की विवेचना करनेवाली चेतन मानसिक प्रक्रिया है।''[44]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इद्, अहम्, पराहम् मानव व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह मानव मन के गत्यात्मक पहलू है।

मन के स्थलरूप रेखीय पहलू :

इद्, अहम्, पराहम् का संघर्ष मन के चेतन, अचेतन, अवचेतन स्तर पर हो सकता है। फ्रायड़ के मन के स्थल रूपरेखीय पहलू को तीन रूपों में विभाजित किया है जो निम्न है :-

चेतन-

स्थलरूपरेखीय पहलुओं में 'चेतन' का अनन्य साधारण महत्त्व है। प्राचीन काल में मनोवैज्ञानिकों की धारणा थी कि मन नित्य चेतन है। अचेतन मन की कल्पना भी नहीं की गयी थी। अब यह स्वीकार कर लिया गया है कि चेतन मानस हमारे संपूर्ण मानस का अंशमात्र है। यह वह अंश है, जो बाह्य जगत के संपर्क में आता है। और पूर्णत: व्यक्त होता है। जे. एफ. ब्राऊन के अनुसार चेतन, मन का वह भाग है जिसमें ऐसी इच्छाएँ तथा विचार रहते हैं जिनका तात्कालिक ज्ञान व्यक्ति को रहता है। इसे व्यक्ति को परिवेश के साथ अभियोजन स्थापित करने में सहायता मिलती है।

अवचेतन-

मानव के अचेतन मन से चेतन मन में कभी-कभी कुछ ऐसी इच्छाएँ निर्माण होना चाहती हैं जो निंदनीय और घृणास्पद होती है। उन घृणास्पद, निंदनीय इच्छाओं को अचेतन में ढकेलने का कार्य अवचेतन मन करता है। अवचेतन के इसी कार्य के कारण हमारे व्यवहारों में संतुलन आता है। इस प्रकार अवचेतन स्थलरूपरेखीय पहलू का दूसरा भाग है।

अचेतन-

फ्रायड़ ने अचेतन की सर्वप्रथम वैज्ञानिक रूप से विस्तृत व्याख्या की है। फ्रायड़ ने कहा है- "अचेतन क्रियाओं का व्यक्ति के जीवन में काफी महत्त्व है। यह एक सक्रिय मानसिक क्रिया है जिसका प्रभाव मानव व्यवहार पर पड़ता है।"[45] अचेतन मन का सबसे बड़ा भाग है। अचेतन में दो प्रकार की इच्छाएँ रहती हैं एक वे जो किसी समय चेतन में थीं लेकिन बाद में अचेतन में चली गयी। दूसरी वे इच्छाएँ जो इतनी कमजोर होती हैं कि चेतन मन तक आ हीं नहीं पाती। अचेतन मन में निहित विचार या इच्छाओं की व्यक्ति अपनी इच्छानुसार व्यक्त नहीं कर सकता। वे इच्छाएँ स्वत: ही प्रकट होती है। इस प्रकार अचेतन मन मानव के सभी व्यवहारों का सूत्रधार है और मानव की प्रत्येक क्रिया अचेतन मन से प्रभावित है।

इस प्रकार मानव मन के गत्यात्मक पहलू का ज्ञान हो जाता है।

निष्कर्ष :

मानव-मन का विश्लेषक मनोविज्ञान है तो साहित्य इन्हीं मनोविकारों और अनुभूतियों की रोचक कथा है। मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मानव मन तथा उसके कार्यों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से सर्वांगीण व्याख्या की जाती है। आज का मनोविज्ञान व्यवहार के दृष्टिकोण में वह सब संबंधित है जिसको आरंभ के मनोवैज्ञानिक अनुभव के रूप में लेते हैं। मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड़, एड़लर और युंग आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान की अनेक पद्धतियों का निर्माण किया है।

वर्तमान परिस्थिति में विषमताओं से युक्त जीवन में मानसिक विकारों का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान का ही सहारा लिया जाता है। मनोविश्लेषण के द्वारा मानसिक चिकित्सा क्षेत्र में पर्याप्त सुधार हुए हैं। मानसिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना ही आधुनिक मनोविज्ञान का प्रमुख लक्ष्य है। मनोविज्ञान की उपयोगिता देखी जाय तो मानव शिक्षा एवं सुधार तथा वैद्यक और रोग परिहार के साथ-साथ व्यवसाय तथा व्यवहार में भी यह उपयोगी सिद्ध होता है। जीवन का विकास मनोविकारों पर आधारित है

और मनोविकार का आधार मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान की स्थिति जीवन की अनेकानेक अभिव्यक्तियों में है।

संदर्भ :

1. डॉ. श्याम सुन्दरदास – साहित्यालोचन, पृष्ठ 48
2. डॉ. सरयु प्रसाद चौबे – असामान्य मनोविज्ञान और आधुनिक जीवन, पृष्ठ 7
3. "The Science cf nature, functions and henomena of the human Soul and mind" – The Oxford English Dictionary, Page 70
4. रामचंद्र वर्मा– मनोविज्ञान, पृष्ठ 293
5. Henry E. Garret – General Psychologi, Page 2
6. Norman L. Munn – Bowding, Page 5
7. "Psychology deals with response to any and every kinds of situation that life presents." – Charles E. Skinner, Page 1
8. डॉ. गणेश दत्त गौंड – आधुनिक हिंदी नाटकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ 62
9. डॉ. गुरूदयाल बजाज – साहित्य मनोविज्ञान और हिंदी एकांकी, पृष्ठ 17
10. डॉ. मिथलेश रोहतगी – हिंदी कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ 17
11. डॉ. मधुकर जैन – यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पृष्ठ 18
12. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड–2, पृष्ठ 508
13. लालजीराम शुक्ल – सरल मनोविज्ञान, पृष्ठ 4
14. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड–2, पृष्ठ 508
15. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड–2, पृष्ठ 508
16. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड–2, पृष्ठ 508
17. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड–2, पृष्ठ 508
18. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड–2, पृष्ठ 508
19. डॉ. गुरूदयाल बजाज – साहित्य मनोविज्ञान और हिंदी एकांकी, पृष्ठ 22
20. डॉ. शिवराम माली – स्वच्छन्दतावादी नाटक और मनोविज्ञान, पृष्ठ 35
21. सी. पी. सिन्हा – सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 15

22. क. अहमद – मनोविश्लेषण और साहित्यालोचन, पृष्ठ 29
23. हरिशरण आर्य – मनोविज्ञान परिभाषा कोश, पृष्ठ 109
24. डॉ. सरयु प्रसाद चौबे – असामान्य मनोविज्ञान और आधुनिक जीवन, पृष्ठ 2
25. नरनारायण राय – असंगत नाटक और रंगमंच, पृष्ठ 55
26. डॉ. सरयु प्रसाद चौबे – असामान्य मनोविज्ञान और आधुनिक जीवन, पृष्ठ 5
27. डॉ. लाभसिंह, डॉ. गोविंद तिवारी – असामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 45,46
28. डॉ. पद्मा अग्रवाल – मानविकी परिभाषिक कोश, पृष्ठ 110
29. डॉ. एस. एन. शर्मा – आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 23
30. हरिशरण आर्य – मनोविज्ञान परिभाषा कोश, पृष्ठ 31
31. सी. पी. सिन्हा – सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 39
32. डॉ. पद्मा अग्रवाल – मानविकी परिभाषिक कोश, पृष्ठ 87
33. गोविंद तिवारी – शैक्षिक एवम् मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, पृष्ठ 23
34. डी. एन. शर्मा – आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 25
35. हरिशरण आर्य – मनोविज्ञान परिभाषा कोश, पृष्ठ 12
36. हरिशरण आर्य – मनोविज्ञान परिभाषा कोश, पृष्ठ 29
37. हरिशरण आर्य – मनोविज्ञान परिभाषा कोश, पृष्ठ 12
38. हरिशरण आर्य – मनोविज्ञान परिभाषा कोश, पृष्ठ 85
39. वा. शि. आपटे – संस्कृत कोश, पृष्ठ 771
40. डॉ. लाभसिंह, डॉ. गोविंद तिवारी – फ्रायड़ (असामान्य मनोविज्ञान), पृष्ठ 155
41. निर्मला शेरजंग – मनोविज्ञान का परिभाषिक शब्दकोश, पृष्ठ 76
42. निर्मला शेरजंग – मनोविज्ञान का परिभाषिक शब्दकोश, पृष्ठ 84
43. डॉ. लाभसिंह, डॉ. गोविंद तिवारी – असामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 159
44. निर्मला शेरजंग – मनोविज्ञान का परिभाषिक शब्दकोश, पृष्ठ 194
45. डॉ. लाभसिंह, डॉ. गोविंद तिवारी – असामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 164